RAMCHANDRA SINGH
Actor- Director

E-7/86, MANAS PLACE
FLAT NO 03, ARERA COLONY
BHOPAL MP-462016
MOB- 9425600454

Date:....14..08..2016

SCHEME FOR "SAFEGUARDING THE INTANGIBLE CULTURAL HERITAGE AND DIVERSE CULTURAL TRADITIONS OF INDIA" 15-16

To

The Secretary
Sangeet Natak Academy
ICH Section
Ravindra Bhawan
Feroz Shah Road
New Delhi- 1

Subject :- 28-6/ICH- Scheme/65/2015-16 के रिपोर्ट प्रस्तुत करने बाबत्।

महोदय,

संगीत नाटक अकादमी के ICH 'स्कीम' के लेटर नं. 28–06/ICH-Scheme/65/2015–16 के अंतर्गत "विलुप्त होती परम्परा लोक नाट्य झरकी नृत्य नाट्य की खोज, प्रदर्शन व संवर्धन हेतु जो कार्य करने की मुझे अनुमति प्रदान की गई है, उस पर गंभीरतापूर्वक कार्य करते हुए, उसका प्राथमिक रिपोर्ट भेज रहा हूँ।

अतः महोदय से अनुरोध है कि इसे स्वीकृत करते हुए आगे की कार्यवाही के लिए उचित दिशा निर्देशन के साथ दूसरी किश्त उपलब्ध कराने की व्यावस्था कराई जाये।

धन्यवाद

संलग्न–
प्रथम रिपोर्ट ।

भवदीय
Rchandra
रामचन्द्र सिंह

भारत की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत एवं परम्पराओं के संरक्षण की योजना का प्रपत्र

1. योजना का कार्य क्षेत्र– रक्सौल प्रखण्ड, मोतिहारी (बिहार)
2. परम्परा का नाम– पारम्परिक झरकी नृत्य नाट्य
3. सम्बंधित समुदाय का भाषिक क्षेत्र और भाषा– जिला चम्पारण, हिन्दी एवं भोजपुरी
4. संलग्नित
5. भोगोलिक क्षेत्र– पूर्वी चम्पारण में रामगढ़वा/रक्सौल प्रखण्ड
6. चरण क्रमांक 06 से 21 तक रिपोर्ट में संलग्नित

पारम्परिक 'झरकी नृत्य नाट्य' (झरकी नाच) से संबंधित मंडली या समुदाय

ग्राम :– गम्हरिया

नाम :– गम्हरिया झरकी नाच मंडली

मुखिया :– श्री रघुनन्दन राऊत

पद :– नियोक्ता / प्रयोक्ता

पता :– ग्राम : गम्हरिया, (बड़का टोला), पोस्टः रक्सौल, पंचायतराज : हरदिया कोठी, जिला : पूर्वी चम्पारण, बिहार 845305

फोन नं. :– 09771194987 : विजय कुमार संचालक

उपर्युक्त संबंधित सभी व्यक्ति खेतिहर मजदूर है, जो दिन भी खेती का काम करते है। इनके रोजी रोटी का जरिया मजदूरी है। इनका किसी भी सरकारी या अर्द्धसरकारी संस्था पर पद या पदनाम से दूर–दूर तक का रिश्ता नहीं है।

पारम्परिक झरकी नृत्य नाट्य

उत्तर बिहार का अति प्राचीन "पारंपरिक झरकी लोक नृत्य नाट्य", जिसे "झरकी नाच" के रूप में जाना जाता है, लगभग विलुप्त सा हो गया है आज।

'पिछले' 80 या इसके बाद दशक के पैदाईश व्यक्ति तो 'झरकी नृत्य नाट्य' का नाम तक नहीं जानते है। हमारे फ़ील्ड वर्क के दौरान तो ऐसे व्यक्तियों की तादाद मिली, जो कि यह जानते भी हों कि 'झरकी नाच' बिहार की कोई 'लोक कला' है। बात यहीं तक समाप्त नहीं होती है, बल्कि कुछ पड़े लिखे विद्वान, जिन्होनें कभी गांवो का रूख तक नहीं किया होगा और अपने को लोक कलाओं से तथाकथित संबद्ध मान लिया है, उनका तक का मानना है कि "झरकी कोई लोक कला थोड़े ही है" ?

काफी अफसोस होता है कि किस कदर हम और हमारी कम्प्यूटराईजड पीढ़ी अपनी परंपरागत संस्कृति विरासत से कट सी गयी है और उससे दूर होती जा रही है।

दरअसल 'झरकी नृत्य' का कोई लिखित साहित्य नहीं है। नाट्यविदों ने अपने लोक ज्ञान में इस 'लोक कला' की और नज़र ही नहीं किया है, उनका सारा ध्यान उन्हीं कलाओं की तरफ रहा, जो संबंधित व्यक्तियों द्वारा सम्मुनत किया जाता रहा है, जैसे– विदेसिया, नटुआ नाच, कीर्तनियां, बिदापत, उप इलाकाई–उप लोक परम्परा– चकवा, झिझिया, जट–जटिन को ही बिहार की लोक परम्परा के रूप में सिर्फ लिखा–पढ़ा गया है।

हमने इस विलुप्त धरोहर को खोज कर, इसे ब्याख्यायित करने की गरज से उत्तर बिहार के पूर्वी चम्पारण जिले के रक्सौल प्रखण्ड,

पंचायत राज हरदिया कोठी के ग्राम–गम्हरिया में 'झरकी नाच' के समुदाय या इससे जुड़े कलाकारों की खोज बीन शुरू करते हुए प्राथमिक बेसिक जानकारी हासिल करने की कोशिश की है :–

झरकी नृत्य में कम से कम 15 और अधिक से अधिक जगहानुपात को देखते हुए 50 कलाकार एक साथ मंच पर उपस्थित रहते हैं। मंच के लिए कोई बड़ा सा खाली जगह या मैद ान होता हैं, कलाकार एक घेरे में (सर्किल) बैठते है, मानों नुक्कड़ नाटक का मंच हो। कलाकरों के पीछे ही दर्शकों के बैठने की जगह होती है, जो सभी दिशाओं में उपयुक्त होता है, दर्शक और कलाकारों के बीच भी दूरी (Distance) नहीं के बराबर रहती है–

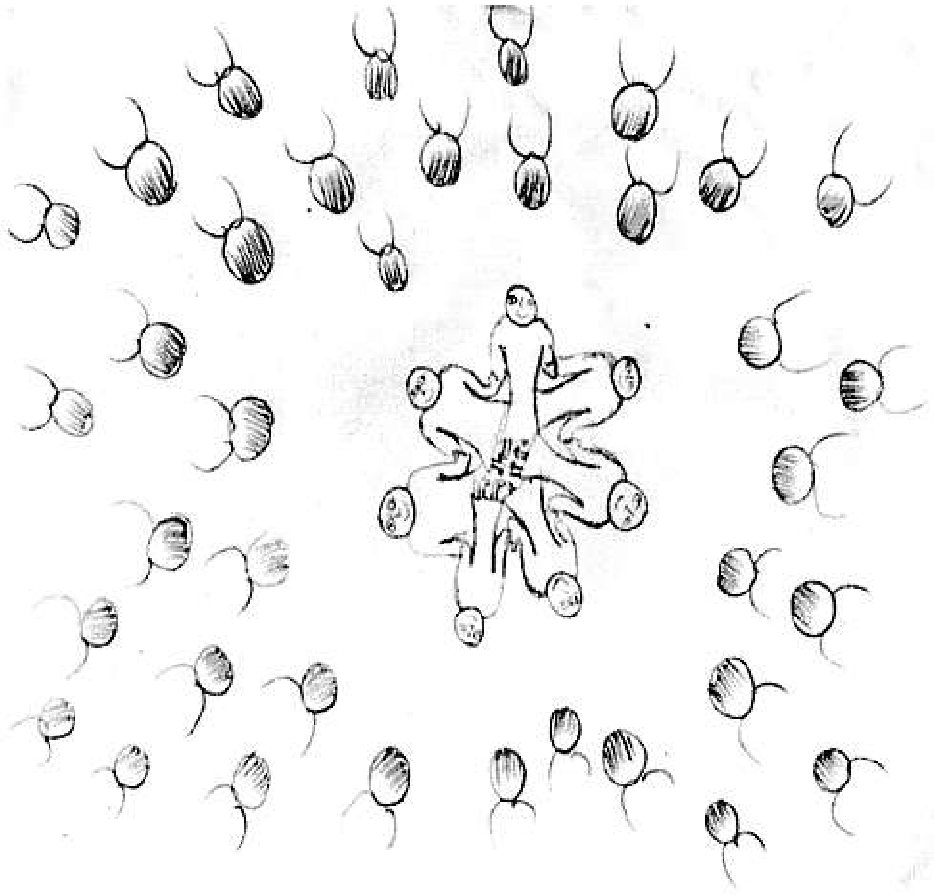

कलाकार कतार बद्ध होते है, जिनके हाथों में 'ठकरा' होता है, जो लकड़ी का खूबसूरत सा डंडा होता है, जैसे कि 'गरबा' का डंडा। इसे कहीं कहीं 'ठकरा नाच' भी कहते है। 'गरबा' का जिक्र इसलिए करना पड़ा कि इसके द्वारा आसानी से ''ठकरा नाच'' को समझा जा सकेगा, क्योंकि शारदीय नवरात्रि के अवसर पर 'गरबा नाच' की धूम पूरे हिन्दुस्तान में रहती है और इससे जन–जन वाकिफ है, इसलिए कि इसे अच्छा खासा मार्केट और कॉरपोरेट का संरक्षण जो मिला हुआ है।

हालांकि 'झरकी नाच' की 'गरबा नााच' से तुलना करना बेमानी है। दरअसल 'गरबा' और 'झरकी' में जमीन– आसमान का अंतर है। 'झरकी नृत्य' में 'कथानक' या 'आख्यानों' की प्रमुखता रहती है। इसका प्रारंभ उसी तरह सुमिरन से होता है जैसे कि अन्य 'लोक नाट्यों' का आरंभ होता है। इस स्थानीय पारंपरिक नाट्य को रात भर खेला जाता है। सुमिरन में धार्मिक या स्थानीय देवी–देवाओं का आहवान होता है–

रामे–रामे, रामें SS हो रामें, रामें जिके हो नईया
रामे–रामे, रामें SS हो रामें, रामें जिके हो नईया
हों SS पहिले त, सुमिरी हो रामा SSS
गाँ SS व के देवी म SS ईया
हों SS पहिले त, सुमिरी हो रामा SSS
गाँ SS व के देवी म SS ईया
दूसर त सुमिरी हो रामा–दूसरें त SS सुमिरी SS हो रामा,
गांव के ब्रहम–बाबा के SSS
गांव के ब्रहम–बाबा के SSS

तो इस प्रकार सुमिरन से आरंभ होकर कथोपकथन, कथानक, संवाद और फिर गायन, 'ठकरा लड़ाना' और वाद्य–वादन कुछ देर तक चलता रहता है।

संगीत पक्ष अति महत्त्वपूर्ण होता है, वाद्य में ढोलक, तबला, हारमोनियम, मृदंग, बाँसुरी, नगाड़ा, झाँझ, करताल, टिमकी आदि की प्रधानता रहती है। अब तो कैसियों का चलन भी जोरो पर होने लगा है। संगितिक पक्ष या यूँ कहें 'संगीत वृन्द' या 'समाजी' के बैठने का स्थान मंच के बीचों बीच रहता है। वाद्यवृन्द में से लगभग प्रत्येक व्यक्ति कथानक के चरित्र का निर्वहन करता है। नाटक के सभी रसों की प्रस्तुतियाँ 'झरकी नाच' में की जाती है। मुख्य पात्र–जो पार्ट खेलते हैं, जिन्हें वेश–भूषा बदलना होता हैं– पास के किसी घर में तैयार होते है, अमूमन वह 'बईठका' या 'घारी' या इसी तरह का ''भुसऊली'' वगैरह ही होता है।

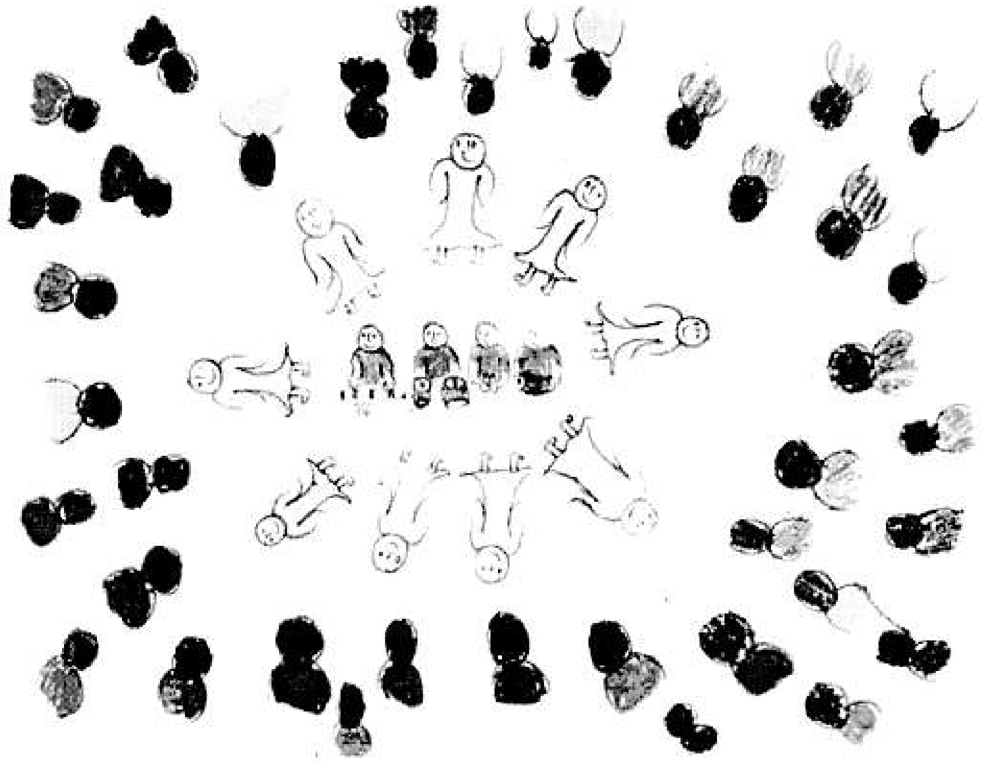

हमारी धरोहर 'झरकी नृत्य नाट्य' प्रोजेक्ट पर प्रथम चरण के क्रिया कलाप :—

'झरकी नृत्य नाट्य' के वंशानुगत कलाकरों की खोज के लिए पूर्वी चम्पारण के ग्राम कटगेनवा, बरवा, चम्पापुर, छौड़ादानों के पास नरकटिया इत्यादि गांवों से होते हुये गम्हरिया पहुँचा, जो मेरा गृह ग्राम भी है। यहाँ हम बचपन से झरकी देखा व खेला करते थे। उस समय इस गांव में दो–दो, तीन–तीन मंडलियों या समुदायों द्वारा अलग–अलग टोलियों में झरकी खेला जाता था। गम्हरिया चार गांवो का एक समूह है– पच्छिमी टोला, सेड़ा, बड़का टोला, हरिजन टोली। 70–80 के दशक में, अपनी–अपनी टोलियाँ इन चारों गांवों में होती थी। वक्त के साथ बदलाव हुआ यह हैं कि उस वक्त के झरकी गाने वाले या यू कहें कि इनके 'अगुआ' के खत्म होने के बाद की नयी पीढ़ियों ने इसमें आमदनी का ज़रिया न देखते हुये, रोजी–रोटी के चक्कर में नागरीय चकरचौंध की तरफ आकर्षित होते हुए गांवो से बाहर निकलते गये और आने वाली पीढ़ी के लिये यह पारम्परिक नाच (झरकी नाच) अबूझ सा हो गया।

बात करते है गम्हरिया बड़का टोला के उस समुदाय की, जो अभी इसे जीवंत रखने की कोशिश करते हुये नयी पीढ़ी को 'झरकी नृत्य नाट्य' से अवगत कराने को बा–मुश्किल प्रयासरत है। गम्हरिया गांव का, एक राऊत घराना है, जिनमें– बिजली राऊत, रघुनन्दन राऊत, विद्या राऊत, बदरी राऊत, मेघनाथ राऊत अद्या राऊत, झापस राऊत, नन्दु राऊत, शिवनाथ राऊत, प्रमोद राऊत– इत्यादि व्यक्तियों की बदौलत ही, इस गांव में 'झरकी' होता रहा है, इनमें से बिजली राऊत, झापस राऊत, अद्या राऊत इत्यादि लोगो का निधन हो गया

है। अब इनमें सबसे बुजुर्ग रघुनन्दन राऊत बचे हैं, जो तकरीबन 90 वर्ष पार कर रहे हैं, अब उन्हीं के सानिध्य और प्रयास से झरकी नाच गाहे–बगाहे गम्हरिया गांव में या आस–पास के ईलाके में होता रहा है। तो रघुनन्दन राऊत से मुलाकात के दौरान जो बातें हुई :–

रामचन्द्र :– रघुनन्दन काका, अब झरकी के के खेलता ऽ ? कि अब खेलऽ तारऽ लोगन की छोड़ दे लाऽ लोगन ?

रघुनन्दन राऊत :– बबुआ बात अईसन बा कि भाई (बिजली राऊत) के मरला के बाद हमही ए के खेले के परयास करी ने, गांव के लईका सब के ले के। वो हू में देख नाऽ, अब कहाँ कवनौ के रूचि बा, आजू के लईका सब ता मोबाईल पर फोटू और सिनेमा देखें मे ला गल रहें ले सन।

रामचन्द्र :– गांव के पुरानका लोग में अब रूचि बा की ना ?

रघुनन्दन राऊत :– हँ, बाटे............ लेकिन अब पहिले जई सन कहाँ मजा आवे ला। फेर इ, जगनाथ सिंह, प्रभु सिंह, लालबाबू लोग वगैरा, आ जाला खेले खातिर। अब देखऽ नाऽ हरमुनिया लायक त कोई हईले न ईखे। हँ नवल सिंह आ जाले कहला पर, ऊ भी मन मऊजी हऊयेन, मन कई लख, त आ गइले, ना ता ढोलके और नगाड़ा यादि से काम चला लेवे लि सन।

रामचन्द्र :– अच्छा, रघुनन्दन काका ! ऐ मे जवन कहानी खे ले ल लोगन ऊ कईसे तईयार करेलऽऽ लोगन ?

रघुनन्दन राऊत :– (कुछ सोचते हुए) रामनरेस, बात ई बा कि कहानी त रामायने, महाभारत के जादातर कहल अऊ खेल ल जाला, जऊन ह सब लोग जानऽ ते बा, बिरिजाभार, लोरिक के कहानी तथा अई सने ही कवनौ गांव के देवी–देवता या लोक परचलित कहानी आपस में बईठ के सुन सुना लि याला। एहि बईठकी में अऊ ईहो तय कर लेवे लिसन कि फलां, 'तू हई बन जईह', 'तु हऊ बन जईअहा'। बस जहां गड़बड़ हो ला, ऊहां, हम कथा जई से बता दे वेनी।

रामचन्द्र :– बहुत बढ़िया ! फेर पोसाक, या सामग्री जईसे– तीर धनुस, गदा या अइसने अऊ सामान के व्यावस्था कईसे करे ल लोगन ?

रघुनन्दन राऊत :– पहिले त गांव में चन्दा वन्दा कईल जात रहे, आऊ वो ही से कवनो नाच वाला से या ऊ दरभंगा के नवटंकी कम्पनी से भाड़ा पर ले आवे जात रहाल। ऊ हो, हम वोतना नईखी जानत, भाई लोग, ऊ सब करत रहे लोग, पर अब त इ सब के सिलसिला खतमे हो गईल बा............

.........अब ता बस जऊन कपड़ा पहिने रहि नेसन, ऊ ही में सब पार्ट खेल लि आ ला।

अब बारी थी, दूसरे कलाकरों से मिलने की और इस परम्परा से संबंधित उन की इच्छा–अनिच्छा जानने की। पता चला कि इसके कोई भी पेशेवर व्यक्ति या समुदाय नहीं है। यह तो एक ऐसी कला है, जो किसी वर्ग या समुदाय विशेष का न होकर सबके लिये सिखने–सिखाने और समझने योग्य खुली परम्परा है। जिसके कुछ दिनों के अभ्यास से कोई भी व्यक्ति आसानी से इसे "खेल" व "कर" सकता है। हाँ लेकिन इसकी गायकी थोड़ी कठिन जरूर है।

मुख्यतः मजदूर वर्ग के लोग ही इस कला को जानते व समझते है, वे ही इस परम्परा को जीवंत किये हुये है। वह दिन भर खेतों में काम करते है, और रात को खाना वगैरह खाने के बाद एक झुण्ड में बैठकर गाना बजाना शुरू करते है। धीरे–धीरे गांवो के दूसरे रसिक दर्शक भी इनके साथ जमा होने लगते है।

आजकल खरीफ फसल की खेती के लिए धान रोपनी का काम जोरों से चलता है। ऐसे कलाकारों से मिलने हेतु उनके पास खेतों में जाना पड़ा, उनमें से कुछ रोपाई के लिए 'धान का बिया' (बीज रूपी पौधा) उखाड़ रहे थे, बात–चीत में उन्होने बताया कि "बबुआ झरकी में मे त, सुमिरन के बाद, निर्गुन अऊ भजन भी गावल जाला"।

मैने कहा कि "अच्छा त कुछ सुनाऽ व लोगन", तो खट से बिना किसी संकोच और झिझक या बहाने बाजी के, और बिना किसी म्यूजिक के ताम झाम के निर्गुण सुनाना शुरू कर दिया। जिसे सी.डी. में कुछ तस्वीरो के साथ देखा सुना जा सकता है, वह इस प्रोजेक्ट के साथ ही संलग्न है।

उपसंहार :–

इस भाग–दौड़ से निष्कर्ष यह निकला की अगली मुलाकात में इसकी प्रस्तुति से संबंधित पहलुओं की बारीकियों पर गौर करते हुये इस परम्परा को एक उत्सव के अन्जाम तक ले जाना है। कथानक का चयन हम लोग मिल बैठकर कर लेंगे, आस–पड़ोस के गांवो के 'झरकी नाच' के कलाकारों को एकत्रित करने के प्रावधान के लिये अभी से जुट जाना है। 'झरकी नृत्य नाटय' को जीवंत करने के प्रयास जानकर, पड़ोसी गांव तथा 'नेपाल राष्ट्र' के सरहद के गांवों के लगभग सभी कलाकार और दर्शक उत्साहित है। 'समाजी' लोगो ने अपने वाद्य ढूँढने और बनवाने प्रारंभ कर दिये है। इस परम्परिक धरोहर ''झरकी नाच'' की खोज से इसकी सार्थकता की समझ लोगो में आने लगी है। फिर हमारे इस बात–चित से कि इसे संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली में अपने पारम्परिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया जाना है, इससे तो संबंधित कलाकार और समुदाय इतने रोमांचित और उत्साहित है कि बार–बार यह पूछते है कि ''राम बबुआ, ई सरकारी लोग देखी का, हमनी के परसतुती ? ई दिल्ली में भी हो ही या कहीं गांव के बाहर हो ही, या कि अपने गांवे में !

उनकी इस तरह की बात चीत से चित भर आता है कि 'जो वास्तविक ज़मीनी कलाकार है, वह किस कदर आर्थिक बद्हाली और गुमनामी की जिन्दगी बसर कर रहे है।' मेरे इस एक प्रयास से वह कितने आशान्वित है कि उनकी यह पारम्परिक धरोहर को फिर से पहचान मिलेगी, संरक्षण और संवर्धन मिलेगा अपनी इस 'लोक कला' को 'बड़े लोगों' के बीच दिखाने का मौका मिलेगा, जहाँ अखबार नवीस और मीडिया–कर्मी उनके काम की स्वीकृति को देश–दुनिया में प्रसारित करेंगे और उन्हें प्रोत्साहन मिलेगा तथा भविष्य में यह

पहले जैसे अपनी लोकप्रियता प्राप्त करेगा।

अतः हम कह सकते है कि संगीत नाटक अकादमी दिल्ली के ऐसे धरोहरों को संरक्षित और सुरक्षित करने कि योजना, हिन्दुस्तान की संस्कृति को सही मायनें में सम्वर्द्धित करने का अनोखा प्रयास है, जो दूरगामी परिणाम प्राप्त करने में कोई कोर–कसर नहीं छोड़ेगा। हमारा प्रयास यही होना चाहिए कि अपने प्रोजेक्ट की समाप्ति पर "झरकी नृत्य नाट्य" का प्रर्दशन संगीत नाटक अकादमी द्वारा निर्धारित किया जा सके, जिससे कि फिर से उत्तर बिहार का यह लोकप्रिय पारम्परिक लोक कला का संरक्षण व सम्वर्द्धन का मार्ग प्रशस्त हो सकेगा।

रामचन्द्र सिंह